बिजली प्रदाय अथवा और कोई कारण दर्शाया होता है "मिल बंद रहेगी" सूचना पढ़ कर वापस निराश लौटने को बाध्य हो जाता है। कई कई महीनों से मिलों की इस स्थिति के कारण मजदूर परिवारों को आर्थिक विपन्नता और अभाव की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। विनोद और विमल कपड़ा मिल की इस स्थिति के कारण जहां दस हजार से अधिक मेहनतकारों को रोजगार नहीं मिल पा रहा है वहीं इन पर आश्रित पचास हजार लोग असहाय हो गये हैं।

अतएव मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि मिलों के प्रबन्ध और व्यवस्था में तत्काल सुधार करें तथा मिलों को नियमित चला कर हजारों मजदूरों और उन के आश्रितों को राहत प्रदान करें।

14.39 Hrs

KHUDA BAKHSH ORIENTAL PUBLIC LIBRARY (AMENDMENT) BILL—Contd.

MR. DEPUTY-SPEAKER: We shall now take up further consideration of the Khuda Bakhsh Oriental Public Library (Amendment) Bill. Shrimati Krishma Sahi may now speak.

श्रीमती कृष्णा साही (बेगुसराय) : उपाध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने जो विधेयक प्रस्तुत किया है उसका मैं स्वागत करती हूं। भारत सरकार देश की कई ऐसी संस्थाओं को जिन का साहित्यिक, कलात्मक और सांस्कृतिक महत्व रहा है उन को अपने अधीन करने जा रही हैं और पहले भी कई ऐसी संस्थाओं को उन्होंने राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं के रूप में परिणित करने का निर्णय लिया है। ऐसी संस्थाओं पर सरकार का व्यय बहुत होता है। भवन निर्माण के लिए भी सरकार एड देती है लेकिन प्रश्न यह है कि जो सरकारी व्यय ऐसी संस्थाओं पर होता है उसका लाभ कहां तक पहुंचता है, कितने लोग उससे लाभान्वित होते हैं। सरकार को इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। बिल्डिंग बनाने के लिए जो पैसा दिया जाता है उसमें कभी कभी ऐसा भी होता है कि पुस्तकालयों के भवन का निर्माण नहीं होता बल्कि उस राशि का डाइवर्जन हो जाता है तथा रख-रखाव के नाम पर भी काफी बड़ी राशि का अपव्यय होता है।

जिस खुदाबख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी के ऊपर इस समय यहां चर्चा चल रही है वह पटना में है। पटना का जितना पुराना इतिहास हमारे पास है वह पटना हजारों साल पहले पाटलीपुत्र था, जिसका विश्व में अपना एक स्थान था। उसी प्रकार से खुदा बख्श लाइब्रेरी का भी इतिहास बहुत पुराना है। एक व्यक्ति विशेष की साहित्य में कितनी दूर तक अभिरुचि थी, उसका यह पुस्तकालय एक प्रतीक है। खुदा बक्श लाइब्रेरी में विश्व की सबसे बेहतरीन मुस्लिम साहित्य का संग्रह है और वहां की पाण्डुलिपियां बहुत ही रेयर हैं। खुदा बक्श लाइब्रेरी जोकि एक व्यक्ति विशेष की साहित्यिक अभिरुचि की प्रतीक थी, उसके अपने व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिए थी, उसको उन्होंने 1891 में जनता के उपयोग के लिए दे दिया। उस समय से बिहार सरकार इसके प्रबंध को अपने हाथ में लिए हुए है। लेकिन सन् 1962 में भारत सरकार ने एक हाई पावर बोर्ड का गठन किया और 1969 में पार्लमेंन्ट के द्वारा एक विधेयक पारित करा कर खुदाबक्श ओरिएंटल लाइब्रेरी ऐक्ट बनाया गया। तबसे एक कमेटी इसका प्रबन्ध चला रही है जोकि डिपार्टमेन्ट आफ कल्चर, भारत सरकार के अधीन है। लेकिन केवल समिति बना देने से ही इस लाइब्रेरी में जो काम हो रहा है, वह संतोषजनक नहीं है।

इस स्तकालय में 1549 से पहले तक की मैनुसक्रिप्ट्स हैं जोकि हमारे पुरातन इतिहास की साक्षी हैं। वहां पर दस हजार वसीज हैं जो अभी अधूरी हैं। अली मदान खां, जोकि काबुल के गवर्नर थे, उन्होंने शाहजहां को उपहार के रूप में यह दी थीं। इस प्रकार से इस लाइब्रेरी का अपना एक करैक्टर है। इसमें बाबर, हुमायूं के हाथ की लिखी हुई कुरान है जोकि विश्व में कहीं भी उपलब्ध नहीं हो सकती है। दुनिया में जो संस्कृति, कला और सभ्यता का इतिहास रहा है उसको यहां पर अमरत्व प्रदान किया गया है। जिन व्यक्तियों को साहित्य और कला से इतनी अभिरुचि थी उनको अमरत्व प्रदान करने के लिए इससे अच्छी निधि और क्या हो सकती है। इस संस्था का अच्छे ढंग से संचालन हो और उसका आम जनता को लाभ पहुंचे इस ओर मंत्रालय को विशेष ध्यान देना चाहिए। सबसे बड़ी बात यह है कि इसका नाम ही ओरिएण्टल लाइब्रेरी है और ओरिएण्टल शब्द में केवल उर्दू और अरबी ही नहीं आती है बल्कि संस्कृत और पाली भी इसमें आ जाती है।

फिलहाल इस लाइब्रेरी के चेयरमैन बिहार के गवर्नर साहब हैं, लेकिन मेरा सुझाव यह होगा चूंकि यह ओरियन्टल लाइब्रेरी है, तो इसमें संस्कृत और पाली आदि ऐसी भाषाओं का भी संग्रह

होना चाहिए । इन से संबंधित किताबों को भी वहां पर रखना चाहिए । पीछे राहुल सांस्कृत्यायन तिब्बत गए थे, तो तकरीबन तीन-चार सौ खच्चरों पर लाद कर बहुत पुराना मैनस्क्रीप्ट लाए थे, जो कि हमारे देश की अमूल्य धरोहर है और विश्व में कहीं भी उपलब्ध नहीं है ।

दूसरी बात, डा० काशी प्रसाद जयसवाल, जिन्होंने भारत के प्राचीन इतिहास के बारे में लिखा है, वह भी अपना एक अस्तित्व रखता है और उसका मिलना भी दुर्लभ है, उन किताबों को भी इस लायब्रेरी में रखना चाहिए । पाटलीपुत्र अब पटना है और वहां पर ये सब चीजें उपलब्ध हैं इसलिए ओरियन्टल लाइब्रेरी को हर तरह से सार्थक बनाने के लिए इस सारे साहित्य को वहां पर रखना चाहिए ।

एक बात मैं यह कहना चाहती हूं कि जो बोर्ड आफ डायरेक्टर्स हैं, जो लायब्रेरियन होते हैं वे सिर्फ लायब्रेरी साइंस जानते हैं या एडमिनिस्ट्रेशन में कुशल हैं, ऐसे लोगों को रखना चाहिए। यह ठीक है कि यह कायदे-कानून की बात है, लेकिन जो विद्वान है, जो संस्कृत का विद्वान है, जो पाली का विद्वान है, जो अरेबिक का विद्वान है, जो उर्दू का विद्वान है--ऐसे विद्वान लोगों को भी बोर्ड-आफ-डायरेक्टर्स में रखना चाहिए, ताकि ओरियेन्टल लायब्रेरी से सुचारु रूप से लोगों को लाभ पहुंच सकें । वहां पर बगल में पटना विश्वविद्यालय है और पटना विश्वविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ते हैं, उनको लाभ नहीं होता है तो आम जनता की बात छोड़ दीजिए ।

जहां तक रख-रखाव की बात है, वह तो बिल्कुल नहीं हो पाता है और वहां किताबों पर धूल जमी रहती है । इस बारे में जब वे जवाब देंगे, तब बतायेंगे भी और जो राशि भवन- निर्माण के लिए मंत्री महोदय देने जा रहे हैं, उससे भवन निर्माण का काम नहीं हो सकता है । यह भी दलील दी गई है कि वहां जमीन नहीं है, जिसकी वजह से उसका विकास नहीं हो सकता है । आज आधुनिक युग में पांच-दस मंजिले मकान बनते हैं, यहां भी एक माडर्न आर्किटैक्ट के द्वारा बहुमंजिला मकान बनाया जा सकता है, जिससे लोगों को इससे लाभ पहुंचे ।

उपाध्यक्ष महोदय, यह राष्ट्रीय लायब्रेरी नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लायब्रेरी है । इसलिए इस लायब्रेरी के चहुमुखी विकास के लिए यही नहीं कि किताबों की संख्या बढ़ा दी जाए, बल्कि जैसा मैंने कहा है कि वहां पर अच्छे विद्वान लोगों को भी इसके बोर्ड-आफ डायरेक्टर्स में रखना चाहिए । मंत्री महोदय को खुद जाकर भी इस लायब्रेरी की स्थिति को देखना चाहिए ।

अन्त में, मैं यह कहना चाहती हूं कि जो राशि इस लायब्रेरी के विकास के लिए देने जा रहे हैं, उसके लिए एक कमेटी बनाकर देखें कि उसका सही उपयोग हो, ताकि लोगों को अधिक से अधिक लाभ पहुंच सके । इन शब्दों के साथ मैं मंत्री महोदय को धन्यवाद देती हूं और अपेक्षा करती हूं कि इस खुदा बक्श ओरियन्टल पब्लिक लायब्रेरी जैसा कि इसका नाम है, वे इसमें विशेष रुचि लेकर इसके चतुर्दिक विकास के लिए सब तरह का प्रयत्न करेंगे ।

प्रो० अजित कुमार मेहता (समस्तीपुर): उपाध्यक्ष महोदय, प्रशासन की सुविधा के लिए जो खुदा बक्श ओरियन्टल पब्लिक लायब्रेरी संशोधन विधेयक सदन में लाया गया है, इसको बहुत पहले लाया जाना चाहिए था ।

यह विधेयक राज्य सभा में 1979 में लाया गया और 1980 के नवम्बर महीने में पारित हुआ और अब ठीक एक साल बाद इस सदन में यह विचाराधीन है । इससे साफ जाहिर होता है कि इस विषय को जितना महत्व मिलना चाहिए, जो अपेक्षित महत्व दिया जाना चाहिए, वह नहीं दिया जा रहा है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली): देर है, मगर अन्धेर नहीं है ।

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : दोनों हैं, देर भी है और अन्धेर भी है ।

प्रो० अजित कुमार मेहता : अभी तक इस लाइब्रेरी के किसी लेखे-जोखे का ब्यौरा सभा-पटल पर नहीं रखा जाता, यद्यपि इस का अधिग्रहण काफी पहले हो चुका था । परिणाम यह हो रहा है कि जो आवंटित राशि है, उस का बहुत बड़ा हिस्सा केवल प्रशासनिक कार्यों पर

ही व्यय किया जाता है, इस के विकास के लिये जो कार्य होना चाहिए था, यद्यपि इस लाइब्रेरी को बने हुए 100 साल होने जा रहे हैं, वह नहीं हुआ है। ऐसा इस लिये हुआ कि हमारी कोई राष्ट्रीय पुस्तकालय नीति नहीं है। यदि हमारी कोई राष्ट्रीय पुस्तकालय नीति होती तो इस तरह का पीस-मील संशोधन नहीं लाया जाता। वास्तविकता यह है कि जब भी कोई समस्या सामने आती है, हम उस का आंशिक समाधान कर लेते हैं, लेकिन उस के विकास के लिए जो कार्य होना चाहिये वह नहीं होता है।

जैसा अभी श्रीमती साही जी ने कहा—यह बहुत पुरानी पुस्तकालय है, इस में प्राचीन पाण्डुलिपियों और पुस्तकों का अमूल्य संग्रह है, मुगलकालीन इतिहास का बहुत प्रमाणिक संग्रह है, जिस पर किसी भी राष्ट्र को गर्व हो सकता है, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि इतने महत्वपूर्ण संग्रह के बावजूद इस संस्था की ओर अपेक्षित ध्यान कभी नहीं दिया गया। यह पुस्तकालय पटना के एक व्यस्त बाजार में स्थित है, नतीजा यह है कि पुस्तकालय के पास कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां शोधकर्ता एकाग्र-चित्त हो कर स्वाध्याय कर सके। इस पुस्तकालय का भवन बहुत पुराना और सीलन भरा है। मुझे डर है, अगर इस पर तुरन्त ध्यान नहीं दिया गया तो इस में संग्रहित पुस्तकों, प्राचीन पाण्डुलिपियों की सुरक्षा नहीं हो पाएगी। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस लाइब्रेरी के लिये तुरन्त आधुनिक भवन निर्मित कराया जाय, जिस में इस बात का ध्यान रखा जाय कि पटना की जैसी आबोहवा है, मेरा तात्पर्य गर्म आबोहवा से है, उस के अनुरूप इस में व्यवस्था की जाय। इस में इस प्रकार का प्रबन्ध किया जाय कि शोधकर्ता निश्चिन्त हो कर, एकाग्र-चित्त हो कर अध्ययन कर सकें। इस के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि जो शोधकर्ता इतने प्राचीन ग्रन्थों और पाण्डुलिपियों का अध्ययन करेंगे उनके वहां पर कुछ दिनों तक ठहरने और रहने की व्यवस्था होनी चाहिये। इस के लिए पुस्तकालय का अपना अतिथि भवन अथवा होस्टल भी बनना आवश्यक है।

इस पुस्तकालय की उपयोगिता बढ़ाने के लिए मेरे कुछ सुझाव हैं। मेरा एक सुझाव यह है कि देश के दूसरे प्रमुख पुस्तकालयों से बहुमूल्य पुस्तकों के पाठ के आदान-प्रदान के लिए फोटोस्टेट प्रिन्ट और माइक्रो फिल्मिंग की व्यवस्था होनी चाहिए। इस से लाभ यह होगा कि जो प्राचीन दुर्लभ पांडुलिपियां हैं, वे बराबर इस्तेमाल में रहने के कारण खराब नहीं होंगी। इस पुस्तकालय में ऐसी भी पांडुलिपियां हैं, जो सोने के अक्षरों में लिखी गई हैं। अगर वे बराबर इस्तेमाल में रहेंगी तो उन के चोरी चले जाने का भी भय है। जैसी स्मगलर्स की एक्टिविटीज देश में चलती रहती हैं, किसी समय ये बहुमूल्य पांडुलिपियां चोरी हो सकती हैं। अगर माइक्रो फिल्मिंग और फोटोस्टेट प्रिन्टिंग की व्यवस्था हो, तो हम इन की सुरक्षा के उपाय कर लेते हैं।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी है। इसलिए इस में पूरब की और कम से कम बिहार राज्य में जो प्राचीन पांडुलिपि हैं, चाहे वे किसी भी भाषा में उपलब्ध हों, उन के संग्रह करने का प्रबन्ध इस पुस्तकालय में किया जाना चाहिए।

इस के अतिरिक्त मेरा सुझाव यह है कि अधिकारी विद्वानों की लाइब्रेरियन के रूप में, लाइब्रेरियन के पद पर नियुक्ति की जानी चाहिए और केवल उन्हीं लोगों की नियुक्ति इस पद पर नहीं की जानी चाहिए, जो केवल लाइब्रेरी साइंस की उपाधि से विभूषित हों। अधिकारी विद्वानों की नियुक्ति भी इस पद पर की जानी चाहिए।

यह लाइब्रेरी हिन्दी क्षेत्र में स्थित है और इस लाइब्रेरी में उर्दू, अरबी और फारसी की पुस्तकें उपलब्ध हैं और पांडुलिपियां भी उपलब्ध हैं। इसलिए इन की उपयोगिता बढ़ाने के लिए यहां पर हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सेवा का भी प्रबन्ध होना चाहिए क्योंकि यह विश्वविद्यालय के बहुत नजदीक है। अभी तक जो सूचना है, उस के अनुसार यही पता चलता है कि इतनी प्राचीन पुस्तकें और पांडुलिपियां उपलब्ध रहने के बावजूद इस पुस्तकालय का उपयोग बहुत कम होता रहा है शोध कार्यों के लिए। इस का कारण यह है कि अनुवाद की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। इसलिए इस की उपयोगिता बढ़ाने के लिए मेरा सुझाव है कि यहां पर अनुवाद सेवा का भी प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस विधेयक का स्वागत करता हूं ।

श्री रीतलाल प्रसाद वर्मा (कोडरमा) : उपाध्यक्ष महोदय, बिहार प्रान्त में जो यह खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी है, यह प्राचीन इतिहास का एक बहुत बड़ा खजाना है । इस लाइब्रेरी की स्थापना खुदाबख्श साहब ने अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों के द्वारा संग्रहीत पुस्तकों से की है और करोड़ों रुपये की दुर्लभ साहित्य की पांडुलिपियों को अक्षुण्ण रखा है । इस लाइब्रेरी को 1969 में भारत सरकार ने.......

MR. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Verma, you can continue tomorrow. Let us take up the next item.

15 hrs.

Discussion re situation arising out of reported conspiracy by separatist elements against the integrity of the country—*contd*.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now the House will take up further discussion on the situation arising out of the conspiracy by separatist elements against the integrity of the country. Mr. Samar Mukherjee.

SHRI. SAMAR MUKHERJEE (Howrah) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, this is a very important subject...

SHRI KRISHNA CHANDRA HALDER (Durgapur) : Where is Mr. Zail Singh ? He is not here when such an important issue is being discussed ! (*Interruptions*)

SRRI R.L. BHATIA (Amritsar) : He is coming now. He will reply to everything. Don't worry.

15.01 hrs

(MR. SPEAKER *in the Chair*)

श्री रामविलास पासवान (हाजीपुर) : स्पीकर साहब होम मिनिस्टर साहब को बुलवाइये । ज्ञानी जी का पता नहीं है । (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : मैं बुलवाता हूं ।

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : वह आ रहे हैं । आप बैठिये ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष जी, अगर उन्हें कुछ देर लग गयी है तो वे सदन से माफी मांग लें । वे गृह मंत्री हैं । बड़े व्यस्त होंगे ।

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : मैं एक बात जरूर कहूंगा कि ज्ञानी जी को सदन से माफी मांगनी चाहिए । ज्ञानी जी की आदत है कि वे सीरियस बात को भी हंसी मजाक में करते हैं । ऐसे नहीं होगा । आपने इसे मजाक बना रखा है । (**व्यवधान**)

गृह मंत्री (श्री जैल सिंह) : ये चाहें तो मैं माफी मांग लूं ।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये । श्री समर मुखर्जी ।

SHRI SAMAR MUKHERJEE : We are discussing a very serious subject involving threat to the integrity and unity of our entire country. The issue of Khalistan should not be looked at in isolation from the conspiracies which are going on now throughout the country to bring about destabilisation, particularly in the border areas and north- east India.

The slogan of Khalistan and the actions after raising the slogan have proved that there are organised forces behind the slogan and those forces are not simply internal forces but there are external forces as well. We have repeatedly said that behind the separatist and secessionist agitations which are going on in our country there is a link with foreign power and particularly, the imperialists.

Khalistan State has already been proclaimed. They have announced the Government. I will show you the currency of the Khalistan Government. This is a dollar currency. It is from Canada. It has been posted from Canada to Comrade Harkishan Singh Surjeet, who is our MP. The stamp is a Candian stamp. Here is their letter-head—Republic of Khalistan, Office of the Consul-General, Johnston Building, Suite 1-45 Kingsway, Vancouver, B.C. Canada V5T3H7, Phone No. 872-321.

You know the main sponsor of the slogan is a person who presided over the Sikh Education Conference, Mr. Ganga Singh Dhillon. He is a citizen of America, he is not an Indian citizen. From that Education Conference a group raised the slogan of Khalistan. It is not that the slogan started from that conference. Beforehand preparations were on. Subsequently you have seen what dramatic developments have taken place—the murder of Jagat Narain, the hijacking of a plane and one Sant suddenby became so famous who directly welcomed